लक्ष्मण पैं की कला में श्रृंगारिक प्रेम की अभिव्यक्ति

संजीव कुमार *

लेखसार

स्वतंत्रता के पश्चात की भारतीय कला गतिविधि का आज भी, ब्रिटिश अकादमिक प्रभाव के साथ साथ, आधुनिक कला के विभिन्न वादों– घनवाद, अमूर्तनवाद, अभिव्यंजनावाद और निर्वस्तुवाद– से प्रेरित होना आज भी जारी है। यह कला गतिविधि सामग्री, बनावट तथा रूपाकार से लेकर मानसिक खोज तक फैली हुई है; अभिव्यक्ति के स्तर पर समाजवादी यथार्थवादी (विशेषतया चित्रकला में) से लेकरक्लासिकल, लोक व जनजातीय कला से प्रभावित प्रतीकवाद तक फैली है। भारतीय कलाकार के काम में एक ऐसी दुनिया प्रतिबिंबित है, जो ऊपरी तौर पर पूरी तरह अव्यवस्थित नजर आती है किंतु जिसमें असीम रचनात्मक व समाकलनात्मक शक्ति है।

दिलचस्प बात यह है कि भारत का वर्तमान कला–परिदृश्य वही है, जो दो दशक पहले अमेरिका का था। आज कि कला न तो किसी स्कोली (स्कुल) का परिणाम है, न ही किसी विचारधारा का। इसका अभिप्रेरक मूलतः किन्ही समान सौदर्यशास्त्रीय विशेषताओं को अपनाना है, जिनकी प्रंशसा प्रवासी कला–प्रारखियों के आलावा स्थानीय कला प्रारखी भी करते है। क्योकि चित्रकला तथा मूर्तिकला तथा को अब अपने आप में साध्य नही माना जाता बलिक कलाकार की निरंतर चलने वाले सृजन कार्य की धटना माना जाता है, अतः इनकी प्रकृति भी अधुरेपन की बन गई है– एक ऐसी स्थिति जिसे हम अपूर्ण सरंचनाओ, कैनवास के रिक्त स्थानो, गड्ड–मड्ड धरातलो और विरूपित आकृतिमूलकता के रूप में देख सकते है और इन्हें ही कलाकार के स्वतः स्फूर्त प्रयास के तौर पर वर्णित किया जाता है। विचार जो किसी अवधारणा का रूप ले सकें और शैली जो परिभाषित हो सके, इनसे बचा जाता है; माना जा रहा कि इससे कलाकार में जडता आ जाती हैं, जो उसे अपने आप को पुनारावृत करते रहने के लिए विवश करने लगती है।

"आज के कलाकार खासतौर पर युवा कलाकार ऐसे रूपाकारो को अपना रहे है, जो बहुअर्थी हो। तथा ये कलाकार स्पष्ट रूप में श्रृंगारिक प्रेम की अभिव्यक्ति को भी दर्शको के लिए एक साफ और स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त करने से नही झिझकते है। उनमें से कुछ प्रमुख कलाकारो का व उनकी शैलीगत् विशेषता का वर्णन हम इस अध्याय में करेगें जैसे– लक्ष्मण पैं, लक्ष्मा गौड, जतिन दास, मनुपारिख, एम डी धरमाणी, बिमान बिहारी दास, विरेन तंवर आदि जिन्होने श्रृंगारिक अभिव्यक्तियॉ का खुब सृजन किया।

सहायक प्रवक्ता, राजकीय कला महाविद्यालय, चण्डीगढ.*

लक्ष्मण पैं –1926—— "लक्ष्मण पैं का जन्म मडगावॅ में 21 जनवरी 1926 को सारस्वत् बह्माण परिवार में हुआ जोकि कामाक्षि रेयेश्वर मेदिर के पूजारी थे तथा ईमानदारी व कठोरता से सारी प्ररम्पराओ का वहन करते थे इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मडगावॅ में मराठी दामोदर विद्यालय से हुई, दो साल पुर्तगीज में ओर बाद में अंग्रजी माध्यम में न्यु ईरा हाई स्कुल से हुई।

इनका चित्रकला में रूझान अपने मामा रामनाथ मोजो के फोटो स्टूडियों के द्वारा हुआ जो भारतीय चित्रकला व शास्त्रीय गायन में बचपन से ही रूचि रखते थे। पैं का कलात्मक जूडाव इन्ही की वजह से हुआ इस बारे मे पैं ने कुछ इस प्रकार लिखा–

"कि मैने सबसे पहले ब्रश व रंगों को संभालना इनके स्टूडियो में ही शुरू किया था तथा हस्तलिखित पत्रिका जो कि मनोहर सरदेसाई के द्वारा सम्पादित होती थी में इलसट्रेशन बनाकर सहयोग करता था।"

मुम्बई विश्वविद्यालय की मेट्रिक की परीक्षा 1943 में उत्तीर्ण करने के बाद इनके माता पिता की सहमति के बाद जे जे स्कुल ऑफ आर्ट में दाखिला लिया कला की विधिवत् शिक्षा ग्रहण करने हेतू।

अपने मुम्बई में पढाई के दौरान पैं सबसे पहले अपने एक रिस्तेदार के यहा तुलसी चाल में गीरगावं ईलाके में रहे जहॉ ये रात को सबके साथ चाल के वरांडे में सोते थे तथा महीने के हिसाब से चावल की प्लेट एक रेस्टोरेंट पर खाते थे। परन्तु अपने को मानसिक व शारीरिक तौर पर मजबूत रखने के लिए पै ने, व्यामशाला कि सदस्यता ले रखी थी। पैं के अनुसार स्वमं अनुसाान व दृढविश्वास ने मुझे एक कच्चे युवा से एक परिपक्व स्वतत्रं बनाया एक सफल जीवन जीने हेतू ।

कला शिक्षा–

© CGCTA

"1943 में नुतन कला मंदिर से आरंभिक स्तर की रेखोकंन परिक्षा पास करने के

पश्चात् इन्होने जे जे स्कुल आफॅ आर्ट में दाखिला लिया ओर 1947 में ड्राईगं व पेटिगं में डिपलोमा प्राप्त किया। म्युरल डेकोरेशन की एक वर्ष की कक्षा के बाद पैं को विद्यालय के सर्वोच्च पदक मायो मेडल दिया दिया गया तथा बाद में अस्सिटेंट अध्यापक के तौर पर नियुक्ती चित्रमकला विभाग में शंकर पालिसकर के साथ हुई जो इतिफाक से मेरे सहपाठि व प्रतिद्विंधी भी थे पढाई के दिनो से। लक्ष्मण पैं ने शंकर पालिसकर के विषय में कुछ इस प्रकार विचार व्यक्त किये–

"में स्वर्गीय शंकर बी पालिसकर को अपने ह्रदय से सम्मान देना चहाता हूं जिनके पास अपार प्रतिभा थी तथा लधु चित्रकला प्रकार की चित्रण में उन्होने टेम्परा प्रकार की रबिंग पद्धति को परिचय करया। ये मेरे धनिष्ट मित्र व शुभचितंक थे तथा जिन्होने मेरे बुरे दिनो मे मदद व मार्गदशर्न किया हम दोनो ने 1949 में मुम्बई में एक समुह प्रदर्शिनी की।"

जे जे स्कुल आफॅ आर्ट में कला की पढाई ब्रिट्रिश पद्धति के अनुसार होती थी जहां लाईफ ड्राईगं व्यक्ति चित्र,स्टिल लाईफ आदि पढाई जाती थी। हांलाकि

उस समय में एक भारतीय लधु चित्र विभाग श्री अहिवासी के अधिन होता था जहा पर लक्ष्मण पैं अपने सयोजनं के विषय च विचारो को विकसित किया, तथा पैं तेल रंग माध्ष्म में छवि चित्र में निपूर्णता हासिल कर चुके थे।

पैं 1946 में बागी और राष्ट्रीय ईच्छा की वजह से गोवां मुक्ति अदोंलन से जूडे तथा उसके बाद उनको केद किया गया, तथा पुलिस द्वारा दोनो हाथो पर डण्डें से मारा गया जब तक दोनो हाथ पुरी तरह सूज व घायल न हो गये। पै मजबुत मानसिक ईच्छा शक्ति के कारण इस सब को बरदास्त करने में सफल रहें तथा इनको एक सप्ताह बाद चेतावनी दे कर छोड दिया।

इसके पश्चात् पैं वापस मुम्बई अपनी कला शिक्षा को पूरा करने। यह वह समय था जब वे प्रोग्रेसिव लिा समुह के खुब कियाकलाप, तर्क विर्तक व प्रदर्शिनियॉ होती थी, तथा पैं भी इस सब में भाग लिया करते थे बिना समुह कि सदस्यता ग्रहण किये। पैं का विचार था कि किसी भी कलाकार की प्रारम्परिक मूल्य उसके अन्दर जन्म से ही होता है, ओर उसकी जडे गहरी होती है, जिसको कृत्रिम उधारी व सतही नकल से ध्वस्त नही किया जा सकता।

"पै ने एक साक्षात्कार में बताया की मेरे कियाकलाप व बहारी कलाकारो से दोस्ती के कारण जे जे स्कुल आफॅ आर्ट के वरिष्ट अध्यापको को जलन होती थी, तथा उन लोगो ने मेरा अचानक में तबादला छोटी कक्षा में कर दिया, बजाऐ

डिपलोमा कक्षाओ में पढाने के, तथा यह मेरा अपमान था जिसको में बर्दास्त नही कर सका तथा मेनें अपना त्याग पत्र निर्देशक को दे दिया। हालाकि वरिष्ठ अध्यापको के साथ निर्देशक की गोष्ठी में मुझे मेरे व्यवहार के कारण माफी मांगने को कहा गया जिसको मेने मना कर दिया, तथा कुछ दिनो के पश्चात् मुझे निकालने का पत्र डाक द्वारा मिला।"

यह पैं के जीवन में एक बदलाव की तरह तथा उनके अंहकार पर बहुत बडी चोट व जिद्द की तरह था, कि वे पूरे कला जगत को अपने वजूद को महसूस करा सके। पै ने 1951 भारत छोडने का निर्णय किया तथा पेरिस चले गये ओर अपना महिम वाला फ्लेट सदानन्द बाकरे को 10000 रूपये में बेच दिया। पेरिस में इन्हे शुरूआति दिनो में सूजा, रजा व पदमसे ने काफी मदद की, तथा पेरिस में ग्राफिक एचिंग व लिथोग्रिफि की कक्षा में दाखिला लिया। पेरिस में हर तरफ कला कि क्रियाकलाप रूपी हवा बह रही थी पै को एक बहुत बडी चुनोति उस हवा में तैरने की थी, बिनस किसी धुमाव के ऐ स्वतत्रं के रूप में जिसकी जडे बहुत गहरी थी भारतीय सस्कृति व दर्शनशास्त्र में। तथा पैं को पेरिस के संग्रहालयो व आसपास के वातावरण में विद्धमान कला आकारो को भी समझना था। पै को पश्चिमी शास्त्रीय संगीत, रंगगृह, ओपरा व बेले नृत्य को भी समझना था तथा कला के पारम्परिक मूल्यों में भेद होने के कारण पै ने निर्णय लिया कि वे मुम्बई के कलाकार जो पेरिस में रह रहे थे उनके साथ मिलकर अपने मूल्यों को विकसित करूगां।

पै के लिऐ विवेकानन्द की पुस्तक कामयोगा ध्यानयोगा बहुत बडी प्ररेणादायक थी, परन्तु लक्ष्मण पै पिकासो, सैगाल व पेरिस के कुछ कलाकारो से भी प्रभावित थे, तथा उनके कार्यो को हमेशा देखते व प्रेरित रहते। मुम्बई में रहने

के दौरान किया योगाभ्यास पै के काफी काम आता था अपने आपको एकान्त में रहने के लिए, कभी कभी तो जानबूझ कर काफी लम्बे समय तक एकान्तवाद में रहते अपने अन्दर खोजने के लिए। पै हमेशा अपने साथ बांसुरी व दिलरूबा रखते थे अपने आप को विश्राम व तरो ताजा रखने के लिए। पै बताते हैं कि मेरे अन्दर यह संगीत की प्रवृति बचपन से थी बिना किसी गुरू के मार्गदर्शन के। पै ने पहली कला प्रदर्शनी प्ररिस में लगाई जिसमे प्रसिद्ध कला समालोचको ने पै के काम की तुलना फ्रांसिस गिलोट के साथ कि जो पिकासो की उस समय साथी। ओर उस प्रदर्शनी क सारे काम एक दांतो के चिकित्सक ने खरीद लिऐ थे तथा पै को अपने बंगले के घर व स्टूडियो की जगह प्रदान की।

कला का क्रमिक विकास–

पेरिस में एक रेडियो साक्षात्कार के दौरान ईकोल डी पेरिस के बारे में पुछा गया तो उन्होने सीधा उत्तर दिया कि ईकोल डी पेरिस के कलाकारो से मे नही बल्कि वे मुझे प्रभावित थे, चित्रकला के विचार के दो आयामी विचार से जिसको जापानी छापा चित्र व भारतीय लघु चित्र व अफ्रिकी मूर्तिशिल्प में खोजा था। पश्चिमी कलाकार अपने ग्रीक कला के पारम्परिक मूल्यो को बुरी तरह तोड रहे थे।

पै ने बताया की मिश्र के मूर्तिशिल्पो ने उन्हे बहुत ज्यादा प्रभावित किया 1951–52 के दौरान बहुत ही साधारण तरीके से उनका एक चश्म चहेरा व सामने की और शरीर बनाने से, तथा पालकली की रेखाकनं व मार्क्स सगाल की कविता मयी आकारो से भी बहुत ज्यादा प्रभावित था। 1953 के पै के कायो। में रेखाओ के रूप में काफी भेद देखे जा सकते है 1954 की पहली श्रखला जोकि भारतीय साहित्य जयदेव के गीत गोविंद पर आधारित थी। पेरिस में दस वर्षो मे

वही रहने के दौरान पै कई बार भारत आते जाते रहे ओर इस दौरान इन्होने पंडित ज्वाहरलाल नेहरू के व्यक्ति चित्रण का मोका मिला।

पै की भारत वापसी– 1961 दिसम्बर में पै वापस भारत लोट आये, तब तक गोवा पुरत्गाल के शासन से छुटकारा पा चुका था। 1963 में मुम्बई के राज भवन में पै की चित्र श्रखंला जोकि कालिदास के ऋृतुसंमहार से प्ररित थी की प्रदर्शनी हुई तथा पुरी तरह से दिल्ली में आहार बस गये ओर यही पर विभिन्न विष्यो पर सर्जन कार्य किया जो पूरी तरह अमूर्त व भारतीय शास्त्रीय संगीत व स्त्री पुरूष के सम्बधो पर आधारित थी। पै 1977 में गोवा के कला महाविद्यालय के प्राचार्य के पद पर नियुक्त हुए तथा परिवार सहित गोवा चले

गऐ जो कि पै के लिए एक बहुत बडी चुनोति की तरह था क्योकि पै ने इतने वर्षो तक एक स्वतंत्र कलाकार के रूप में कार्य किया था, पै ने गोवा कला महाविद्यालय को वहा के प्रशासन व दोस्तो ओर सहअध्यानको के सहयोग से कला महाविद्यालय एक आयाम प्रदान करने में सफल रहें, एवं सेवा निर्वत होने के पश्चात् पै 1987 में वापस दिल्ली आ गऐ ओर अपने स्टूडियो में कला सृजन करने लगे। के रूप में कोलाज कार्यो में लक्ष्मण पै ने वक्षस्थल, पैर ओर धड, मोडल की पिभिन्न मुद्राऍ को बार बार

बनाने के तरीके कामुकता को आनन्दमयी बनाने वएक कामुक्ता की वस्तु दर्शक को अपनी ओर खिचने के लिए प्रयोग किया। पै ने इन तश्वीरो में उत्सुक दृर्श्यरतिक आकृति बनाई है, एक पंक्ति आखों की दृष्टता देखती है तथा वक्षस्थल व हाथ इनमें से बाहर निकलते है। पै के ये कोलाज कामकला कम और कामोउद्दिपक ज्यादा प्रतित होते है जिसका उद्देश्य दर्शक को बह्म आनन्द तक ले जाती है।

पै ने पेरिस में काफी समय बिताया जिसके कारण पै अपनी एक दर्श्य भाषा बनाने में सफल हुए जिसमें ये तत्व इनके महत्वपूर्ण पहचान बने, कोणय रेखा, सरलीकरण चित्रमय स्तर की स्पाटता तथा अभिवयक्ति का प्रयोग तथा लयात्मक रेखाये उसकी काव्यत्मक विषेशता के साथ, पै पालक्ली, मार्क सगाल व जोन मिरो से प्रभावित थे, के कार्यो में पारम्परिक व आधुनिक तत्वो का समिश्रण है। पै के कार्यो भारतीय लोक कला के प्रकार की खोज दिखती है। पै को दो बार ललित कला का राष्ट्रीय पुरस्कार से भी नवाजा गया और इन्हे इनके कला जगत में योगदान के कारण पदमश्री पुरस्कार से भी भारत सरकार ने नवाजा।

पै ने विभिन्न विषयों पर चित्र बनाये पर सबसे ज्यादा जयदेव के गतिगोविंद, कालिदास के ऋतुसमहारा, कामसुत्र, रामायण व संगीत के रागो से प्रभावित थे।

श्रृंगार– 127 X 87 CM– यह कृति पै ने अपनी भाषा के अनुरूप बनाई है जिसमे इन्होने त्रिकोण गोलाई व आयताकार आकारो के संयोजन से स्त्री व पुरूष के सघं को सफलता से अभिव्यक्त किया है, दोनो आकृति मानो एक में बदलती जा रही हो तथा स्तह को खुरच कर टेक्सचर बनाया गया है, जो भडकीला प्रभाव लाने में सफल होता है। इस चित्र में भी रंगो का सयोजन गरम रंगो का ही

रखा गया है जैसा की पैं ने दूसरे चित्रो में प्रयोग किया है। हाथो की मुद्रा से लगता है की ये आकृतिया बह्म लोक की है जिसमें पुरूष का हाथ अभय मुद्रा में तथा स्त्री के हाथ मे फूल पकडे दिखाया है जिसमे ये शिवा और प्रावति का साकेंतिक व आधुनिक रूप दिखता है।

पुरूष प्रकृति–127 X 87 CM– इस कृति मे भी पहले बनी कृतियों के विषय वस्तु पर बनी है इसमें पैं ने स्त्री व पुरूष को एक सघं के रूप में बनाया है यह चित्र पुरी तरह से ज्यामित्य आकारो के संयोजन के बना है जिसमे रूत्री के वक्षस्थल को एक फुल के रूप में दिखाया है चित्र में हाथो के द्वारा मुद्राओं को भी बनाया गया है पृष्टभूमि पीले व नीले रगं से मोटे मोटे पैचो से बनी है। पुरूष चहरे को वर्ग व स्त्री के चहरे को त्रिकोण के द्वारा अभिव्यक्त किया गया है, तथा त्रिकोण पुरी तरह वर्ग अन्दर बनाया है मानो आकार सघं में है और एक दूसरे में

पुरूष प्रकृति

समाये है। बालो के पिदे त्रिकोण व लटके दिखाया जो इस बात को स्पष्ट करता है कि पै ने इस सांकेतिक आकार में पुरूष व प्रकृति का मिलन बहुत भी प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है।

काम– 127X102cm, 1997– यह पुरा चित्र पैं ने सांकेतिक व आकारो से सृजित किया है, तथा इस चित्र में भावना व आकार स्पष्ट रूप से सांकेतिक है तथा स्त्री व पुरूष की वासना को अभिव्यक्ति के लिए शरीर के उन भागो को ऊपर की तरफ जाती बहती ऊर्जा जोकि घुमती रेखा केरूप में बनाई है तथा रंगो का संयोजन गरम गुलाबी रंग से किया गया है। होठ के निचे जो त्रिकोण का चिन्ह है वह पुरूष को सांकेतिक रूप में अभिव्यक्त करता है तथा उसके निचे योनि चिन्ह बनाया गया है, तथा एक सफेद रगं की एक रेखा जो कि अण्उकोष की सांकेतिक अभिव्यक्ति है तथा यौनि में प्रविष्ट होती है तथा यौनि चिन्ह के दोनो तरफ लाल पीले रंग में जो आकार बनाये है वे पुरूष शुक्राणु को अभिव्यक्त करता है जो कि सृजन के लिए बीज की तरह है इस भाव को अभिव्यक्त किया है। पुरूष प्रकृति इन कामसुत्र–9 यह चित्र भी पैं पुरूष के हाथ शक्ति के वक्ष स्थलो को दबाते बनाया है ऊपर कोणीय तथा बहती रेखाऐ व आकार उनके बीच की उत्तेजना को बहुत प्रभावी ढगं से स्थापित किया है। पुरूष के पैरो को इस प्रकार आपस में जोडा है कि

काम

उनके बीच का स्थान यौनि को अभिव्यक्त करता है।यह कृति भी वातसायन के कामसुत्र ग्रंथ पर आधारित है। पुरा चित्र ज्यामितय आकारो के द्वारा सरली–करत् रूप में सृजित किया है।

पुरूष प्रकृति इन कामसुत्र– पैं ने पुरूष प्रकृति इन कामसुत्र श्रंखला में पै ने पुरूष व स्त्री के संघ की लोकिक शक्ति के भाव का बहुत ही सुन्दर समंमश्रिण किया है जिसमे विभिन्न आकारो व उपागमो जो वातसायन ने काम सुत्र में बताये थे और जो परम आन्नद व प्रजनन अथवा सृष्टि के सजृन के लिए अतिमहत्व पूर्ण है। इस चित्र में पैं ने स्त्री व पुरूष सधं को बहुत ही अमुर्त रूप से अभिव्यक्त किया है जिसके मध्य में एक गोले में सांकेतिक लिगम व योनि को बनाया है। चहरे को एक तरफ आयताकार तथा तथा दाई तरफ गोलाई लिए हुए बनाया है जो स्पष्ट रूप में पुरूष व स्त्री को अभिव्यक्त करता है। तथा चहरे के साथ उपर बहती हुई रेखाएँ तथा निचे अग्नि रूपी रेखाएँ स्त्री व पुरूष के बीच उत्तेजना को प्रदर्शित करती है। पुरा चित्र अमुर्त आकार लिए हुए है तथा रंगो का सयोजन इस प्रकार किया गया है कि देखकर पुरूष व स्त्री के मिलन की उत्तेजना को ज्यादा लौकिक रूप से प्रदर्शित करती है। चित्र के दाये भाग में पुरूष का हाथ स्त्री के वक्ष स्थल को दबाते हुए बनाया है, यह चित्र

वातसायन के काम सुत्र को भलिभांति दृश्य भाषा में बताने में पूरी तरह सफल होता हैं।

पुरूष प्रकृति इन कामसुत्र– उत्तेजित कृति में लक्ष्मण पै ने हिन्दु लौकिक संकेतो ओर काम पर आधारित संस्कृत साहित्य कामसुत्र से प्रेरणा ली। यह पुरा चित्र विभिन्न काम मुद्राओ, युगल व प्रबल भाव का लेख चित्र है। हिन्दू लौकिक विचार के अनुसार काम क्रिया भाव प्रजनन का एक तरीका ब्रह्माण्डीय पुरूष शक्ति को एक प्रभावशाली युगल के रूप में बारम्बार सजृन होता रहा है शिवा का एक लिगम् के रूप में जिसे पुरूष भी कहा जाता है तथा उसके साथ प्रकृति को ब्रह्माण्डीय रूत्री शक्ति के रूप में बनाया जाता रहा है जो सारी सृष्टि की जननी है।

पुरूष प्रकृति इन कामसुत्र

पै ने इस कृति में इसी भाव से प्रेरित होकर एक सघं को बनया है जिसमे उन्होने चित्र के मध्य में एक पुरूष व स्त्री को बनाया है तथा इस युगल के लौकिक कमलन से उत्पन्न ऊर्जा को अग्नि रूपी लपटो के द्वारा संकेतिक रूप में तिसरी आखॅ के साथ बनाया है, एवं प्रकृति ओर शक्ति को आलिगंन करते हुए बनाया है। पुरूष का हाथ स्त्री के वक्षस्थलो पर है ओर उनका शरीर

पुरी तरह से एक दूसरे में समाते हुए बनाया है, तथा पीली, सन्तरी लपटे उनके बीच की उत्तेजना अग्नि प्रदर्शित कर रही है, तथा स्त्री व पुरूष के चहरे को कामसुत्रा के अनुसार अथवा भारतीय मूर्तिकला के अनुरूप दिव्य आनन्दप्रदक भाव में बनाया है पुरा चित्र लौकिक अभिव्यक्ति लिए हुए है। पैं ने बहुत ही सृजनीत्मक रूप से स्त्री के दोनो पैरो जोकि मुड कर आपस मे जूडे बनाये है के बीच के स्थान को योनि रूप में सुजित किया है।

जेनिसिस

जेनिसिस–लक्ष्मण पैं ने यह कृति 1960 में सृजित की जिसमें मिश्र का ज्यामितिय प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस कृति में पुरूष व स्त्री के रूप को सांकेतिक आकार में दिखाया है, एवं टेक्सचर को उसके साथ जोडा है। पुरूष आकृति को चोरस आयताकार रूप में बनाया है जोकि गहरे नीले भूरे रंग में सयोजित है। स्त्री आकृति को पुरूष ने अपने हाथो में उठाया हुआ है जो उनके आलिंगनबद्ध होने का प्रतीक है। स्त्री के चहरे की जगह पैं ने पाचॅ छ पत्तियॉ बनाई है तथा स्त्री की योनि को दिखाने के लिए पैं ने एक पीले रंग की बेल रूपी आकृति के बीच गहरा भूरा रंग लगा कर आभाष दिया है, कृति की पृष्ट भूमि में बाई तरफ गहरे रंग का टेक्सचर दिया है तथा दाई तरफ हल्के भूरे रंग का टेक्सचर दिया है

जो स्त्री पुरूष आकृति को सामने आने मे सहयोग करता है यह चित्र पै ने तेल रंगो में बनाया है।

अतः हम कह सकते है कि समस्त प्राणियों का स्वभाव है कि स्वाभाविक यथार्थ से भिन्न होने, दिखने या करने का उपक्रम करे। पर क्या कल्पना की भी कोई सीमा होती है? कला सत्य, शिव व सुन्दर की आत्मा है। कला के बारे में कहा जाता है – *'कलयति मनासिः सा कला'* अर्थात जो मन को सुन्दर लगे, आर्कषक लगे वही सुन्दर है।

ग्रथं संदर्भ

1. 1. ललित कला समकालीन प्रकाशन, 1989।
2. केप्स जोरजी, 1969, **द नेचर लव आर्ट आफॅ मोशन**, लन्दन।
3. मांगो प्राण नाथ, 2000, **कन्टेमपरेरी इण्डियन आर्ट ए परस्पेक्टिव**, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
4. कृष्णनारायण कक्कड, समकालीन कला, नवंबर 1980 ललित कला अकादमी, नई दिल्ली।
5. मास्टर्ज ऑफ कंटेंपोरेरी आर्ट फ्राम सार्क, 1992, प्रदर्शनी केटेलोग, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय।
6. वर्मा कैलास, प्रोग्रसिव आर्टिस्टस ग्रुप रूप एक मूल्याकंन, मई 1986. समकालीन कला, ललित कला अकादमी, नई दिल्ली।
7. केसर उर्मि, ट्रेंड्स इन द फार्टीज, 1984, यूबी पब्लिशर्ज ड्रिस्टीब्यूट्रर्ज।
8. कपुर गीता, कोनटेम्परेरी इंडियन आर्टिस्ट के दस साल|
9. www. DAG.com
10. www.contemparory art gallery.com

© CGCIA